पहली शव्वाल / शबे ईद

शव्वाल के अअमाल

हदीस में आया है कि जो शब-ए-ईद जागे, तो उसका दिल न मरेगा, उस दिन कि जिस दिन सब के दिल ख़ौफ से मुर्दः होंगे। फर्माया यह शब, शब-ए-क़द्र से कम नहीं है। अतः इस शब भी गुस्ल सुन्नत है कि जब सूरज डूब जाये, तो गुस्ल करे और जब मग़्रिब की नमाज़ और नाफलः पढ़ चुके, हाथ आसमान की तरफ ऊँचा करे और कहे :-

"या ज़ल मन्ने वत्तौले या ज़ल जूदे वलएहसाने या मुस्तफेया मुहम्मदिन व नासेराहू सल्ले अला मुहम्मदिंव व आले मुहम्मद वग़फिरली कुल्ला ज़नबिन अहसैताहू व हुवा अिनदाका फी केताबिम मुबीन"

{अर्थात् ए एहसान और अता वाले ए सख़ावत और बख़्शिश वाले ए मुहम्मद (स॰) को चुनने और मुनतखब करने वाले और उनके मददगार दुरूद भेज मुहम्मद (स॰) व आल-ए-मुहम्मद (अ॰) पर और बख़्श दे मेरे हर गुनाह को जिसे तूने महफूज़ कर लिया हो और वह तेरे पास है वाज़ेह (स्पष्ट) और रौशन किताब में।}

फिर सिज्दे में जाये और सौ बार कहे "***अतूबो इलल्लाह***" (अर्थात् मैं खुदा की बारगाह में तौबः करता हूँ) फिर जो दुआ हो उसे माँगे।

अनुमति : अब्बास बुक एजेंसी द्वारा प्रकाशित "तोहफतुल-अवाम" से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990